दोहराया है । यहां प्राचीन काल से ५ मन्दिरों व ५ स्तूपों का वर्णन आया है । यहां पांचों स्तूप तो विद्यमान हैं पर यहां कोई जैन मन्दिर अधिक पुराना नहीं । सभी मन्दिर मुस्लमानों के शासन के अन्तिम दिनों के हैं । सभी मन्दिर व स्तूप विक्रमी १७-१८ शताब्दी तक विद्यमान थे । आक्रमणकारी के आक्रमण व गंगा की भयंकर वाढ़ इस तीर्थ को बहाकर ले गई । अब यहां बचे हैं रेत के ऊंचे-ऊंचे टीले ।

जैन समाज प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ्देव से भगवान महावीर तक और उनके बाद इस तीर्थ से जुड़ा रहा है । यहां पर कुछ प्रसिद्ध संस्थाओं का हम परिचय दे रहे हैं ।

श्वेताम्बर मन्दिर

यहां मूलनायक प्रभु शांतिनाथ का मन्दिर धर्मशालाओं से घिरा हुआ है । इस प्रतिमा की स्थापना १९२९ वैसाख के दिन श्रीजिन कल्याण के द्वारा हुई थी । इनको अब भव्य रूप दे दिया गया है । इस तीर्थ की व्यवस्था में श्री आनन्द जी कल्याण जी पेढ़ी अहमदाबाद का अभूतपूर्व सहयोग है । इस मन्दिर में धर्मशाला के अतिरिक्त भव्य भोजनशाला, पारणास्थल, पारणा मन्दिर, शोभायमान है ।

श्री ऋषभदेव का पारणा स्थल व भव्य मन्दिर :

भगवान ऋषभदेव व श्रेयांस कुमार के जीवन से सम्बन्धित झांकियां संगमरमर में कलाकृत की गई हैं । यह झांकियां मनमोहक रूप से देखी जा सकती हैं । भगवान शांतिनाथ का चौमुखा मन्दिर बालाश्रम है । जहां आसपास के गांवों के बच्चे गुरुकुल में पदति से पढ़ते हैं । यहां दादावाड़ी व धर्मशाला है । एक जैन स्थानक भी हस्तिनापुर में है, जहां रहने की व्यवस्था भी है ।

श्री श्वेताम्बर जैन निशियां

श्वेताम्बर मन्दिर से दो कि.मी. दूरी पर एक प्राचीन स्तूप है, जहां भगवान ऋषभदेव ने पारणा किया था । पास ही उनकी चरण पादुका हैं । इन चरणों पर छत्री बनी हुई है । यहां भगवान ऋषभदेव से सम्बन्धित चित्र लगाये गये है ।

इन स्तूपों के पीछे प्रभु शांतिनाथ, प्रभु कुथुनाथ व श्री आदिनाथ के चरण हैं । एक छत्री में भगवान मल्लिनाथ के चरण हैं । अब यह स्थल बहुत विकसित हो चुका है । यह पक्की सड़क से जुड़ा है । यहां एक पारणा मन्दिर, एक तीर्थंकरों का मन्दिर व एक गुरु मन्दिर बन चुके हैं । इस तीर्थ के पीछे गंगा नहर बह रही है । इस स्थल से प्रभु शांतिनाथ की धातु प्रतिमा भी निकली थी । यहां खड़ी दिगम्बर प्रतिमा कायोत्वर्ग भी इसी दिगम्बर मन्दिर में विराजित है । यहां भी कैलाश पर्वत का निर्माण हो रहा है, जो अपने आप में अनुपम होगा ।

दिगम्बर जैन संस्थाएं :

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर- यह मन्दिर २०० वर्ष पुरातन है । इसका निर्माण दिल्ली के सेठ ने राजा की आज्ञा से उस स्थान पर बनाया था जो धरती से ५० फुट ऊंचा है । यहां मन्दिर में विशाल धर्मशालाओं का समूह है । यात्रियों के ठहरने के लिये समुचित व्यवस्था मन्दिर की ओर से प्रदान की जाती है ।

यहां मूलनायक प्रभु शांतिनाथ हैं । साथ में धातु की विशाल प्राचीन प्रतिमा इसी मन्दिर में स्थापित है जो श्वेताम्बर निशियों से निकली थी । यहां प्रभु कुथुनाथ व प्रभु आदिनाथ की प्रतिमाएं हैं । सामने कीर्ति स्तम्भ है । इस मन्दिर के

पीछे चार छोटे-छोटे मन्दिर हैं । एक तरह से नन्दीश्वर दीप की स्थापना की गई है, जहां मूर्तियों की भरमार है ।

साथ में समोसरण मन्दिर की विशाल रचना शास्त्र विधि के अनुसार की गई है । चारों तरफ प्रभु की प्रतिमा है । इसके देव-देवियां, तिर्यंच, मनुष्य द्वारा भगवान की देशना सुनने का दृश्य जीवन्त ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

साथ के मन्दिर में प्रभु पार्श्वनाथ व अन्य तीर्थंकरों की प्रतिमाएं हैं, जो काफी प्राचीन प्रतिमाएं हैं । उसी के पास एक रास्ता जंगल को जाता है । इस जंगल में समेदशिखर पर्वत की रचना की गई है । शिखरजी के अनुसार ही निशियां स्थापित की गई हैं । उसी तरह जल मंदिर है ।

इसी मन्दिर में जब हम वापिस आते हैं तो दूसरी तरफ भगवान बाहुबली का आधुनिक मन्दिर हैं । इस तरफ प्राचीन मन्दिर में एक ब्रह्मचारी आश्रम मन्दिर है, जहां शास्त्र स्वाध्याय की सुन्दर व्यवस्था है ।

यह मंदिर शिखर जी की तरह बंदरों की वनस्थली है । सारे हस्तिनापुर में अंग्रेजों के जमाने से ही शिकार खेलना मना है । इसका कारण यहां जंगल व जंगली जानवर अपना प्राकृतिक जीवन जीते हैं ।

श्री दिगम्बर निशियां :

दिगम्बर जैन समाज की पांच निशियां है । यहां चरण के स्थान पर स्वास्तिक बनाये गए हैं । एक निशि तो श्वेताम्बर निशि से ३ कि.मी. की दूरी पर है ।

श्वेताम्बर निशियों के सामने तीन तीर्थंकरों की छत्रियां हैं । जहां स्वास्तिक हैं । इस टीले पर एक प्राचीन स्तूप भी है । शायद यह उन पांच स्तूपों में से एक है।

श्वेताम्बर निशियों से वापस हस्तिनापुर आते एक जंगल में दिगम्बर निशियां हैं । एक प्राचीन गुफा है, इन निशियों से बाहर निकलते ही हम मुख्य सड़क पर आ जाते हैं ।

जम्बूद्वीप :

हम जिस क्षेत्र में रहते हैं, उसे जम्बूद्वीप कहते हैं । जम्बू का अर्थ जामुन है । शायद इसी कारण इस क्षेत्र का नाम यह पड़ा । हम भरत खण्ड में रहते हैं । यह क्षेत्र द्वीप समुद्रों से घिरा हुआ है । इनके मध्य एक लाख योजन का सुमेरू पर्वत है । यह जैन भूगोल का विषय है । इसका ज्योतिष व गणित से सम्बन्ध है । पर इस बात को संसार के सामने सहज ढंग से प्रस्तुत करने का बीड़ा उठाया दिगम्बर जैन समाज की महान साध्वी माता ज्ञानमती जी ने । माता ज्ञानमती जी आचार्य देशभूषण महाराज की शिष्या है । वह परम विदुषी है, इनके १०० से ज्यादा ग्रन्थ जैन धर्म के विभिन्न विषयों पर छप चुके हैं । वह अयोध्या, कुण्डलपुर जैसे तीर्थों का जीर्णोद्धार बन चुकी है ।

उन्होंने भगवान महावीर की २५वीं जन्म शताब्दी पर इसका निर्माण कार्य शुरु करवाया । इस विस्तृत परिसर का उद्घाटन स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने किया था । बड़े लम्बे समय के बाद धरती का शृंगार जम्बूद्वीप बना । यहां सात समुद्र, द्वीपों, चैत्यालय व प्रमुख पर्वत की स्थापना उल्लेखनीय ढंग से की गई है । यहां वाहन से घूमा जाता है । जम्बुद्वीप को समझने के लिये गाईड की जरूरत है । सुमेरू पर्वत ८१ फुट ऊंचा बनाया गया है । इसके भीतर की सीढ़ियां चढ़ने पर चार मंजिलें आती हैं । दूसरी मंजिल सबसे ऊंची है । हर मन्दिर पर चहुमुखी प्रतिमाएं

हैं । इस जम्बूद्वीप में हजारों छोटी-वड़ी प्रतिमाएं हैं ।

इस परिसर में ध्यान मन्दिर में ही ध्यान किया जाता है । ध्यान चौवीस तीर्थंकरों का ध्यान है, इस परिसर में वहुत जिन मंदिर है । जहां धातु व संगमरमर की प्रतिमाएं हैं । दीवार पर जैन धर्म से सम्वन्धित चित्रों को अलंकृत किया गया है।

एक कमल मन्दिर है, जो जलमंदिर में स्थापित है । एक संगमरमर पर कमलनुमा छत के अंदर प्रभु महावीर जी मूलनायक हैं । एक आर्ट गैलरी है । यहां प्रकाशन विभाग है, जहां से माता जी के सभी ग्रन्थ मिल सकते हैं । यहां माता जी का आश्रम भी है । इस भव्य परिसर में हजारों यात्री रोजाना आते हैं ।

तीर्थराज हस्तिनापुर की यात्रा

इस तीर्थ की प्रथम यात्रा मैंने उस समय की थी जव हम श्री महावीर जी गये थे, वापसी पर दिल्ली आये तो पता लगा कि अक्षय तृतीय का मूल शुभ अवसर है । एक वात मैं वता दूं कि मेरे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन १९७० में पहली वार इस तीर्थ पर आये थे, फिर हर वर्ष वरसी तप के समारोह में भाग लेते रहे हैं । १९४७ में नया हस्तिनापुर वनाया गया जिसे सरदार पटेल उत्तर प्रदेश की नई राजधानी वनाना चाहते थे । उन्होंने पाकिस्तान से आये शरणार्थियों को यहां मकान वनाकर दिये । परन्तु दुर्भाग्यवश प्रधानमंत्री श्री नेहरु की विरोधता से यह कार्य सम्पन्न न हो सका । श्री नेहरु लखनऊ को राजधानी वनाने के पक्ष में थे । हस्तिनापुर के गांव में व्याप्त पंजावी आवादी है । ज्यादा सिक्खों को यहां जमीनें मिली हैं, यह सारे गांव शरणार्थियों के हैं ।

हम दिल्ली से मेरठ पहुंचे, शाम हो चुकी थी, यहां

तीर्थ पर पंजाबियों का अच्छा जमाव था । हमें यहां स्वर्गीय श्री सत्य पाल जैन जीरे वाले मिले, उन्हानें हमारे ठहरने की सुन्दर व्यवस्था कर दी । तपस्वियों के लिये अलग प्रवन्ध किया जा रहा था । आम लोगों के लिये अलग प्रवन्ध किया जा रहा था । यहां कई तपस्वी हमारी पहचान के थे । हमारे लिये इस तीर्थ पर आना परम सौभाग्य का अवसर था । हमें इस तीर्थ पर जनसाधारण की आस्था का प्रमाण मिला ।

मैंने अपने कमरे में अपना सामान टिकाया । हमें कमरा दिगम्बर धर्मशाला में मिला । मेले के अवसर पर दोनों समाज इकट्टे हो जाते है । सभी धर्मशालाओं का कंट्रोल मेले के कारण श्वेताम्बर समाज के हाथ में था । यह जैन एकता का अच्छा प्रमाण है । हमने रात्रि को सभी मन्दिर देखे । उस समय जम्बूद्वीप का निर्माण हो रहा था । गुजराती धर्मशाला भी सड़क पर तैयार हो रही थी । यहां धार्मिक वातावरण था । यहां पहुंचकर संसार से कट चुके थे । यहां आकर हमारे सामने तीर्थंकरों का इतिहास आंखें के सामने घूम गया । यह धरती पर तीर्थंकर प्रभु के समोसरण आये । हमारे लिये यहां का कण-कण पूज्नीय व वन्दनीय है ।

हमारी यह प्रथम यात्रा थी । रात्रि में पारणा स्थल व सामने के स्तूप नजर आये । रास्ते में माता ज्ञानवती जी के दर्शन किये । शाम को यहां की भोजनशाला में भोजन किया । यहां हर धर्मशाला में भोजन की सुन्दर व्यवस्था है । दिगम्बर धर्मशालाओं में भोजन का प्रवन्ध वताने पर ही किया जाता है । हस्तिनापुर की प्राकृतिक छटा में हम सो रहे थे । विभिन्न मंदिरों में दानियों की वोलीयां चल रही थीं । यह वोलीयां पूजा के लिये होती हैं । सवसे वड़ी वोली श्रेयांस कुमार वनने की होती है । यह वोली लाखों रुपये तक

पहुंचती है । सारी रात्रि में आवागमन बना रहता है । मन्दिर को सुन्दरता से सजाया जाता है । हर तरफ से देश के विभिन्न प्रान्तों के श्रावक व श्राविकाओं के दर्शन हो रहे थे ।

बरसी तप पारणे का आंखों देखा हाल

आखिर वह मंगलमय वेला आ गई । पहली बरसी तप का अर्थ समझना जरूरी है, जिसकी पूर्ति के लिये यह समारोह होता है । श्रावक अक्षय तृतीया के अगले दिन पुनः उपवास करता है । एक दिन भोजन करता है, एक दिन शुद्ध निराहार रहता है । उस दिन भी वह जल ग्रहण करता है । इस तरह ६ मास बिना भोजन के जो तप किया जाता है उसे बरसी तप कहते हैं । वह भगवान ऋषभदेव को स्मरण करने का ढंग है । उन्हें जिस तरह साल के बाद भोजन मिला था, उसी तरह उनके भक्त उसी विधि से पारणा करते हैं । यह पारणा उनके पोत्र श्रेयांस कुमार पारणाक्षु रस से करवाया था । ठीक इसी बात को ध्यान में रखकर तपस्वियों के पोत्र द्वारा इक्षुरस से सम्पन्न करवाया जाता है, अगर किसी के पोत्र नहीं है तो वह किसी बच्चे को धर्मपोत्र मानकर यह शगुन पूरा करता है।

तपस्वी सर्वप्रथम सुबह मन्दिर में दर्शन का पारणा स्थल पर जलूस की शक्ल में जाते है । सभी यात्रियों के साथ उनके परिवार-रिश्तेदार होते हैं । सभी पारणा स्थल पर पूजा करते है । पूजा वालों की भीड़ रहती है । इस तरह दोपहर का समय हो जाता है । लोग सुबह मन्दिर में आते हैं, फिर मुख्य मन्दिर में पूजा की जाती है । इस तरह दोपहर के समय यह समारोह पारणा मन्दिर में शुरु होता है । सभी पारणे वाले लम्बी पंक्तियों में बैठते हैं ।

सर्वप्रथम सभी पारणा वालों का स्वागत मन्दिर कमेटी की ओर से होता है । फिर श्रेयांस कुमार बना व्यक्ति हर पारणे वाले को कुछ न कुछ प्रभावना के रूप में भेंट बांटता है । तपस्वी परस्पर तोहफों का आदान-प्रदान करते हैं । यहां मुनिजनों के उपदेश भी होते हैं । उनकी तपस्या का अनुमोदन होता है । भविष्य में तपस्या करने की प्रेरणा दी जाती है । तोहफे में सोने व चांदी के गहने, वस्त्र, नकदी, पुस्तक, सिक्के भेंट किये जाते हैं । तपस्वी इन भेंट को आगे अपने रिश्तेदारों में बांट देते हैं । उस दिन हर तपस्वी कुछ न कुछ दान मन्दिर को करता है । हैसीयत के अनुसार प्रभावना बांटता है । जैन धर्म में तीर्थंकर गोत्र के बीस बोलों (कारणों) में प्रभावना अंग भी एक है, जिसका अर्थ है धर्मप्रचार करना । धर्मप्रचार का कोई भी अंग हो उसे प्रभावना की श्रेणी में रखा जाता है । शास्त्र व मुनिराज हमें उपदेश देते हैं । यह प्रभावना अंग तीर्थंकर गोत्र कर्म का कारण है ।

हम इस समारोह में हाजिरी दे रहे थे । यहां विशाल मंडप में एक तरफ शोभायमान थे । दूसरी ओर इक्षुरस तैयार हो रहा था । वहां जनसाधारण के लिये भी इक्षुरस उपलब्ध था । तपस्वियों के लिये यह व्यवस्था एक घंटे की थी । तपस्वियों का आधा दिन बीत चुका था । दो बजे के करीब पारणा आरम्भ हुआ । चांदी के छोटे-छोटे कलशों में इक्षुरस एक बड़े पात्र में डाला जा रहा था । इन कलशों के बारे में कहा जाता है कि भगवान ऋषभदेव ने १०८ कलशों से पारणा किया था । यही प्रक्रिया चांदी के कलश के रूप में दोहराई जाती है । १०८ छोटे कलश भरने से इस आधा किलो से कम ही रहता है । १०८ एक मांगलिक अंक है । यह नौ का प्रतीक है । ९ का अंक जैनधर्म में बहुत

महत्व रखता है क्योंकि नवकार मंत्र में ९ की संख्या प्रमुख है । ९ का अंक अखण्ड माना जाता है ।

उस दिन १३० तपस्वी थे । इनमें अधिकांश महिलाएं थी, पर कई पति-पत्नियों तपस्वी जोड़ों के दर्शन करने का सौभाग्य मिला । कभी-कभी उपवास करना कठिन है, पर यह तो आलौकिक तप महोत्सव था । हमने हर तपस्वी को प्रणाम किया, कुछ सोधु-साध्वियों के पारणे भी थे जो ज्यादा गुजरात से थे । इनके दर्शन किये । मंगल पाठ सुना, फिर भोजनशाला से दोपहर का भोजन किया । करीव तीन वजे हम यहां से रवाना हुए ।

यहां से वापसी मुजफ्फर नगर होते हुए, हम यमुनानगर पहुंचे । जहां मैं कुछ समय के लिये मैं अपने रिशतेदारों से मिला । अव वापसी पटियाला के रास्ते से रात्रि के दो वजे मैं अपने निवास धूरी पहुंचा । रास्ते में मुजफ्फर नगर, खतौली, देववंध, सहारनपुर जैसे इतिहासिक शहर आये ।

तव से अनेकों वार हस्तिनापुर की यात्रा कर चुके हैं । कभी हरिद्वार के करीव होने से, कभी देहली से हस्तिनापुर पहुंचे । हर वार इस तीर्थ की तरक्की देखी, लोगों की भीड़ वढ़ी है, नये-नये निर्माण हो रहे हैं । जव पहली यात्रा की थी तव यहां से गंगा नदी दूर थी । करीव सात किलोमीटर दूरी पर कुछ एक हिन्दू धर्म के मन्दिर हैं क्योंकि इस शहर का सम्वन्ध महाभारत से भी रहा है । उस समय के किले की दीवारें व खुदाई के चिन्ह, वालाश्रम के टीले के पीछे देखे जा सकते हैं ।

हमारी हरिद्वार दिल्ली यात्रा :

जीवन में कुछ क्षण ऐसे होते हैं, कुछ काम ऐसे होते हैं, जिन्हें करने से आत्मा को प्रसन्नता होती है । ऐसी ही

घटना मेरे जीवन में घटित हुई । आज जब मैं तीर्थ यात्राओं का वर्णन कर रहा हूं, इनमें एक तीर्थ यात्रा हरिद्वार की है जो मैंने अपने धर्मभ्राता श्री रवीन्द्र जैन के आग्रह से विधिपूर्ण सम्पन्न की । यह तथ्य सर्वमान्य है कि उत्तर भारत में हरिद्वार हिन्दू धर्म का सर्वमान्य तीर्थ है, यहां गंगा बहती है । गंगा हिन्दू धर्म, विशेष रूप से ब्राह्मण आस्था में बहुत महत्व रखती है । इसी आस्था को सम्मुख रखकर इसी गंगा किनारे १२ वर्ष के बाद कुम्भ लगता है । जहां देश-विदेश से करोड़ों यात्री डुबकी लगाकर स्वयं को धन्य मानते हैं । गंगा हिमालय के गंगोत्री स्थान से निकलकर हरिद्वार तक पहुंचती है । हरिद्वार के घाटों पर हजारों सालों से हिन्दू यात्री, साधुओं के झुण्ड हर रोज आते हैं । हरिद्वार में हजारों मन्दिर, आश्रम, अन्न क्षेत्र हैं । गंगा से एक हिन्दू का जन्म से मरण तक का संबंध जुड़ा हुआ है । उत्तर भारत के लोग हर रोज यहां पुण्यार्जन हेतू स्नान करते हैं । इस तरह वे आश्रमों में साधुओं के दर्शन करते हैं । मन्दिरों की पूजा, अर्चना में भाग लेते हैं । जिस स्थान पर मुख्य स्नान होता है, उसे हरि की पौड़ी कहते हैं । यहां भी अन्य तीर्थों की तरह हर धर्म, राष्ट्र, जाति के लोग आते हैं ।

मैंने अनेकों बार इस स्थल की यात्रा की है पर यह विभिन्न बात थी कि मेरे धर्मभ्राता ने इस स्थान की यात्रा नहीं की थी । इसके कई कारण थे । सबसे बड़ा कारण किसी सहयोगी का साथ न मिलना, दूसरे किसी तीर्थ पर बिना प्रयोजन से कोई नया व्यक्ति अकेला नहीं जा सकता । वैसे भी बिना कारण व्यक्ति का घर से निकलना कठिन है । हमारे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन ने मुझसे कई बार हरिद्वार देखने की इच्छा जाहिर की । ऐसा कोई कारण नहीं था कि हम दोनों यात्रा सम्पन्न कर पाते और मैं अपने

धर्मभ्राता की इच्छा पूरी कर पाते ।

पर जब अनुकूल अवसर आता है तो सारे कार्य ठीक होने लग जाते हैं । ऐसा ही समय हमारे जीवन में आया । आचार्य श्री सुशील मुनि जी की वरसी का महोत्सव दिल्ली में आचार्य डाक्टर साधना जी महाराज के नेतृत्व में मनाया जाना था, उसके लिये निमन्त्रण मिला, हम गोविन्दगढ़ से गाड़ी द्वारा हरिद्वार रवाना हुए । यहां हजारों की संख्या में जहां वैष्णव मन्दिर हैं वहां अब हरिद्वार में जैन धर्म के तीन मन्दिर बन चुके हैं । एक दिगम्बर मन्दिर जो हरि की पौड़ी के पास वाली गली में स्थित है । दूसरा श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर जैन मन्दिर, जो दूधाधारी के आश्रम के पास स्थित है । यह मन्दिर धर्मशाला युक्त है । यह भव्य मन्दिर पिछले वर्षों में बना है । इस मन्दिर में हर तल पर चार समोसरण युक्त प्रतिमाएं हैं । नीचे तल में एक मन्दिर में प्रतिमाएं हैं । इस मन्दिर में एक उपाश्रय, भोजनशाला, लाईब्रेरी, धर्मशाला है । यह मन्दिर ऐसी जगह स्थित है जहां गंगा नदी मन्दिर के पास से बहती है । इस मन्दिर के कारण अधिकांश जैन साधु-साध्वियों का हरिद्वार, ऋषिकेष तक यात्रा संभव हो चुकी है । मेरे मन में अपने ध र्मभ्राता को यात्रा के अतिरिक्त यह मंदिर दिखाने की योजना थी ।

हमारी हरिद्वार यात्रा :

हमने मूलतः दिल्ली जाना था । रास्ते में अचानक ही यह प्रोग्राम बन गया । मैं अपने धर्मभ्राता रविन्द्र जैन की इच्छा पूरी करना चाहता था। अचानक ही जब मैंने ड्राईवर से कहा कि गाड़ी हरिद्वार ले जाओ । इस बात को सुनकर मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन के मन में मेरे प्रति श्रद्धा के चिन्ह

उभरने लगे । मेरे लिये गंगा का स्नान कोई नई वात नहीं थी, परन्तु मैं इसे धर्मभ्राता के साथ यात्रा सम्पन्न करना अपना सौभाग्य समझता था । इसी श्रद्धा आस्था के वंधन में वंधे हम इस तीर्थ पर आ पहुंचे । यह विल्कुल नया अनुभव था । आज तक मैं इस स्थान पर आता रहा हूं । पर अपने धर्मभ्राता से किया लम्वा वायदा अव पूर्ण होने का समय आ चुका था । हरिद्वार की पवित्र भूमि हमें अपनी ओर आकर्षित कर रही थी । कुछ ही समय वाद हम हरिद्वार की ओर घूमे । गंगा की एक धारा सड़क के साथ चल रही थी । यह गंगा की वह भूमि है जहां वहुत सी सभ्यताओं क विकास हुआ । हम ११ वजे के लगभग हरिद्वार पहुंचे । वहां मैंने सर्वप्रथम गंगा किनारे हरि की पौड़ी पर उतरना ठीक समझा ।

इस समय गर्मी अपने परम उत्कर्ष पर थी, गंगा की धारा कल-कल करती वह रही थी । यह दृश्य इतना अनुपम था । इस क्षेत्र में प्रकृति प्रवास करती है । अव गंगा की सीढ़ियों को संगमरमर से पक्का कर दिया गया है । वहां नंगे पांव चले । यह फर्श तप रहा था । जल्दी से गंगा की गोद में पहुंचे । जितनी वाहर गर्मी थी उतनी गंगा शीतलता प्रदान कर रही थी । गंगा में हम दोनों ने डुवकी लगाई । मैं यहां एक वात और वता दूं कि मेरे धर्मभ्राता को तैरना नहीं आता । इस कारण वह जल से डरता है । पर मेरे कहने पर उसने मेरे साथ डुवकी लगाई । यह अभूतपूर्व अनुभव मेरे जीवन की महत्वपूर्ण प्राप्ति है । यह गंगा स्नान अपने धर्मभ्राता को करवा कर मैंने जीवन के वायदे की पूर्ति की । कुछ भी हो मेरे लिये यह स्नान एक अद्‌भुत अनुभूति छोड़ गया ।

मैंने स्नान के वाद हरिद्वार के प्रसिद्ध मन्दिर देखे । फिर मैंने अपने धर्मभ्राता को लक्ष्मण झूला दिखाया ।

समयाभाव के कारण हमें हरिद्वार शीघ्र छोड़ना पड़ा । यहां से हम हरिद्वार के बाजार देखने गये । यहां के बाजार नवीनतम व प्राचीन सभ्यता के संगम हैं । हरिद्वार में देखने को बहुत कुछ है । हजारों सन्यासियों के दर्शन करने का अवसर मिलता है, पर सबसे महत्वपूर्ण गंगा का स्नान है । हमने गंगा के श्री वेदान्तानन्द का आश्रम देखा । यहां विभिन्न देवी-देवताओं के अतिरिक्त जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं हैं । यहां पहले श्री अभयमुनि नाम के जैन मुनि की थी । हरिद्वार में एक दार्शनिक स्थल भारत माता का मन्दिर है । यहां अनेकों आश्रम में विद्या तथा योग का प्रबन्ध है । यहां गुरुकुल कांगड़ी का वर्णन उल्लेखनीय है, जिसकी स्थापना आर्य समाज के नेता स्वामी श्रद्धानंद जी ने की थी । इस केन्द्र ने देश की स्वतन्त्रता में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

हरिद्वार से वापसी :

हरिद्वार से हम देहली जाना चाहते थे । जहां आचार्यश्री सुशील कुमार जी महाराज की स्मृति में एक समारोह रखा था । उसी समारोह में हमें भाग लेना था । हम मुजफ्फर नगर आये । यहां से हम मीरापुर-गणेशीपुर मार्ग से हम हस्तिनापुर तीर्थ पहुंचे । इस तीर्थ का वर्णन मैंने पिछले प्रकरण में कर दिया है । हम शाम को हस्तिनापुर पहुंचे । सबसे पहले हम भगवान शांतिनाथ के मन्दिर में रुके । प्रबंधकों ने हमें ठहरने के लिये कहा, पर मैंने अपनी दिल्ली की मजबूरी बताई । प्रभु शांतिनाथ, आदिनाथ, कुंथुनाथ की भूमि को वन्दना की । मन्दिर से निकलकर पारणा स्तूप की तरफ गये । पारणा मन्दिर अब बहुत विकास कर चुका है । यहां मन्दिरों का अच्छा समूह बन गया है । मैंने जब पहली हस्तिनापुर यात्रा की थी, जब हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप बन में

रहा था । अब यहां भी मन्दिरों का समूह बन गया है । इसी तरह दिगम्बर जैन मन्दिर में बहुत नये निर्माण हो चुके हैं । यहां गुजराती लोगों ने एक नई १०० कमरों की डीलक्स धर्मशाला बनवाई गई है । हम इस स्थल पर दो घण्टे रुके । रात्रि पड़ चुकी थी ।

रात्रि को हम मेरठ पहुंचे । करीब ६ बज चुके थे, हम खाना खाने के लिये एक भोजनालय में आये । फिर मेरठ को अलविदा कहा । मेरठ से मोदीनगर, मोहन नगर, गाजियाबाद होते हुए हम दिल्ली पहुंचे । वहां हम अपने घर पश्चिम विहार दिल्ली में रुके ।

सुबह आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज के सम्मेलन में भाग लिया । उनके सम्मेलन में सभी धर्मों के लोग भाग ले रहे थे । इस सम्मेलन की प्रधानगी तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री के. नारायणन ने की थी । इस सम्मेलन में हमारी भगवान महावीर पुस्तक (द्वितीय संस्करण) का विमोचन श्री नारायणन ने किया । यह पहली पुस्तक का दूसरा संस्करण था । हमने विमोचन के पश्चात् यह ग्रन्थ आचार्य श्री के चरण-कमलों में समर्पित किया । यह हमारी कम्पयूटर पर प्रकाशित प्रथम पुस्तक थी । इस अवसर पर हमारी संस्था ने आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज को सम्मानपूर्वक एक चादर समर्पित की । इस चादर को उपराष्ट्रपति श्री नारायणन ने आचार्य श्री को भेंट किया ।। उपराष्ट्रपति द्वारा एक जैन मुनि का उनके आश्रम में पहला आश्रम पहला समारोह था । यह समारोह काफी रंगारंग था । सभी वक्ताओं ने आचार्यश्री की राष्ट्र के प्रति सेवाओं को याद किया गया ।

इस समारोह में भाग लेने के पश्चात् हम वापिस घर आ गये । यह हरिद्वार की यात्रा जो मैंने अपने धर्मभ्राता के

साथ सम्पन्न की, उसकी इच्छा की पूर्ति थी । उसकी मेरे प्रति श्रद्धा व आस्था का प्रतीक थी । यह संक्षिप्त यात्रा मेरे धार्मिक जीवन पर अमिट छाप छोड़ गई है ।

इस यात्रा में हरिद्वार का महत्व इसलिये है क्योंकि इस पूर्व मेरे धर्मभ्राता ने इस तीर्थ की यात्रा नहीं की थी । बाकी स्थलों पर तो वर्ष में एक-दो बार आना जाना रहता है । इस यात्रा में मैंने हस्तिनापुर के विकास देखने का अवसर मिला । अब प्राचीन काल की तरह गंगा हस्तिनापुर तीर्थ को स्पर्श करती, गाजियाबाद, शाहदरा पहुंचती है । दिल्ली के अधिकांश हिस्सों को गंगा का जल सप्लाई किया जाता है । यह जल कृषि के क्षेत्र में भी उपयोग होता है ।

इस यात्रा के बाद काफी समय हम लम्बी यात्रा के लिये नहीं निकले ।दिल्ली में तो आना जाना बना रहता है । हर यात्रा जीवन में ज्ञान की वृद्धि का कारण होती है । इस दृष्टिकोण से हर यात्रा सम्पन्न की जाती है ।

प्रकरण १४

मेरी राजस्थान तीर्थ यात्रा

मै महावीर इंटरनैशनल संस्था का मालेरकोटला इकाई का उप-प्रधान था । इस संस्था के अखिल भारतीय महावीर इंटरनैशनल संस्था के उप-प्रधान श्री धर्मपाल ओसवाल हैं। वह परोपकार व शाकाहार के कामों में भाग लेते रहते हैं । इस संस्था का विश्व स्तरीय सम्मेलन जयपुर में होना तय था । उनका अनुरोध था कि मैं इस सम्मेलन में भाग अवश्य लूं । इस संस्था का मुख्य कार्यालय जयपुर में स्थित है । इसकी स्थापना जयपुर के एक जैन आई.ए.एस. अधिकारी श्री जे. सी. मेहता ने की थी । इसका उद्देश्य भगवान महावीर के सिद्धान्तों का प्रचार करना है । इन सिद्धांतों में प्रमुख हैं शाकाहार । शाकाहार ही अहिंसा का प्रमुख आधार है । शाकाहारी व्यक्ति सहज भाव से करुणा व सत्य की प्रतिमा होता है । इस संस्था की एक खास बात है कि संस्था में कोई भी शाकाहारी व्यक्ति शामिल हो सकता है । इसके लिये आयु, जाति, रंग का भेद नहीं रखा जाता । यह संस्था परोपकार के काफी कार्य करती है । इस संस्था की प्रमुख सहयोगी संस्था है भगवान महावीर कल्याण केन्द्र जयपुर । यह संस्था कृत्रिम अंगों का निर्माण करती है । फिर अपंग व्यक्तियों को ढूंढ कर, उनके साईज के अंग लगाती है । संसार में जयपुर के कृत्रिम अंग बहुत ही हल्के होते हैं। इस संस्था को राष्ट्रीय स्तर पर बहुत सम्मान मिल चुके हैं । जिस भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त सेवा सम्मान प्रमुख हैं । कृत्रिम अंग की सेवा बिल्कुल निःशुल्क होती है ।

संस्था को दानी सज्जन चला रहे हैं । इसकी एक ब्रांच लुधियाना में खुल गई है । मानवता की इस सेवा के

अतिरिक्त हम संस्था के सदस्य गरीब विद्यार्थियों की शिक्षा में सहयोग देते हैं । रक्तदान कैम्प आयोजित करते हैं । प्राकृतिक विपदाओं में लोगों को हर प्रकार से सहयोग देते हैं । ऐसी संस्था में रहकर मानवता की सेवा की जा सकती है । महावीर इंटरनैशनल की संसार भर में शाखाएं हैं ।

इसी संस्था का सम्मेलन जयपुर में था । हमें विधिवत निमन्त्रण पत्र मिला । हमें इस सम्मेलन में डेलीगेट का दर्जा मिला था । उन दिनों पंजाब में महावीर इंटरनैशनल की मात्र ३-४ शाखाएं ही खुल पाई थीं । इस संस्था में जैनों के चारों सम्प्रदाय के लोग व सभी शाकाहारी शामिल हैं । यह संस्था निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है । जैन मुनियों के प्रवचन आयोजित करती है ।

हमारी जयपुर यात्रा :

हमारा काम इस प्रकार का है कि हमारा घर से बाहर जाना काफी कठिन हो गया है । पहले घर की देखरेख की व्यवस्था बनानी पड़ती है । घर में माता पिता और बुजुर्ग हैं उनके स्वास्थ्य की चिंता मुझे हर समय रहती है, पर मुझे महावीर इंटरनैशनल का निमन्त्रण था । इस दो दिन की कन्फ्रेन्स में हमारा जाना जरूरी था फिर भी मुझे घर में पिता जी के अस्वस्थ होने के कारण लगता था कि हम नहीं जा पायेंगे । मैंने अपने धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन से कहा तुम मंडी गोविन्दगढ़ आ जाना और फिर जैसा प्रोग्राम बनेगा हम चलेंगे । इन दिनों में मेरे धर्म आचार्य अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी जी महाराज का चतुर्मास था । वैसे भी जयपुर राजस्थान की राजधानी है । कला, संस्कृति, धर्म का संगम है । इस शहर को भारत का पैरिस कहा जाता है । लाल व गुलाबी पत्थरों से निर्मित यह शहर पर्यटकों की

स्वप्न स्थली है । यह विशाल राजमार्ग अपना आकर्षण रखता है ।

राजस्थान टूरिज्म द्वारा स्वागतम होटल से नियमित होटल से यात्रा की जा सकती है । राजस्थान के इस नगर में सैकड़ों जैन मन्दिर हैं, स्थान हैं, जैन उपाश्राय हैं, प्रकाशन संस्थान हैं । जैन समाज की यहां अनेकों शिक्षण संस्थान व हस्पताल मानव जाति की सेवा में कार्यरत हैं । राजस्थान के शहर में देखने को बहुत कुछ है । इस प्रकार की संरचना बहुत सुन्दर है, खुली सड़कें हैं ।

दर्शनीय स्थल :- जयपुर में हवा महल, सिटी पैलेस, म्यूजियम, डबल खेटड़ी, सोशल म्यूजियम, आमेर के महल, नाहरगढ़, रामगढ़, जन्तर मन्तर, जौहरी बाजार, टैक्सटाईल के लिये बापू बाजार, त्रिपोलिया (तांबे-निकासी की वस्तुएं) शॉपिंग सैन्टर देखने योग्य हैं ।

राजस्थान की इस प्राकृतिक व एतिहासिक भूमि पर स्थापत्य कला के प्राचीनतम अप्रतिम सौन्दर्य वाले मन्दिरों, गढ़ों, रानियों के जौहर, वीरता में रंगी माटी का एक और मनोरम महल है जिसे सिटी पैलेस के नाम से जाना जाता है । यह मात्र महल ही नहीं एक नगर भी है ।

इसके उत्तर पश्चिम महल के मध्य में दुग्ध धवल सात मंजिल संगमरमरी पत्थरों से चन्द्रमहल में महाराजाओं का अतीत सजीव हो उठा है । चन्द्रमहल से उत्तर के महल के बगीचे में गोविन्दजी का मन्दिर है । जयपुर में सर्वप्रसिद्ध पांच मंजिल हवामहल सिटी पैलेस के निकट ही हैं । महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने संवत् १७९९ में इसका निर्माण करवाया था । इसकी स्थापत्य शैली भी अद्भुत है, पीछे ३६० खिड़कियों से ठंडी हवा आकर शीतलता प्रदान करती है । यह महल देखने में पिरामिड जैसा दिखता है ।

सूर्य उदय के समय सूर्य की सनिगध किरणों से हवामहल का सौन्दर्य और अभिभूत कर देता है । इसका नजारा देखने योग्य होता है ।

शहर के दक्षिण रामनिवास उद्यान में जयपुर का जादूघर है । चिड़ियाघर इस स्थान पर है, यह खाई से घिरा हुआ है, यहां सिंह, वाघ, स्वतन्त्र घूमते हैं । जयपुर से ६ कि.मी. दूर १७३४ में जयसिंह द्वितीय द्वारा निर्मित नाहरगढ़ या सुन्दरगढ़ दुर्ग है । जयपुर के दक्षिण से आठ किलोमीटर की दूरी पर सिसोदिया रानी का वाग है।

मानसिंह की तृतीया पत्नी गायत्री देवी द्वारा निर्मित मोती का महल मोतीडुंगरी काफी ख्याति प्राप्त है । शहर से १६ कि.मी. दूर सांगनेर जैन तीर्थ है, जहां रत्नों से निर्मित जैन प्रतिमाएं देखी जा सकती हैं । यह मन्दिर १५०० ई० से जैन मन्दिरों का समूह वना था । यह शहर खण्डर वन चुका है । वर्तमान में यहां १० जिनालय हैं । इनमें प्रमुख हैं मन्दिर संघी जी, मन्दिर अढ़ाई पेढ़ी जी तथा मन्दिर वधीचन्द्र जी ।

रानी के वाग के सामने निकट ही विद्याधर का वाग है । जयपुर का मूल आकर्षण शहर से ११ कि.मी. उत्तर पूर्व में जयपूर-दिल्ली रोड पर आमेट का किला है । राजपूत स्थापत्य का यह सुन्दर नमूना है, जिसका निर्माण १५६२ में राजा मानसिंह ने किया था । राजा मानसिंह की वहन जोधावाई अकवर की पत्नी थी । उसी से सलीम पैदा हुआ था । इस विशाल किले की पूर्ति १०० साल में हुई थी । इसको सम्पूर्ण करने का श्रेय सर्वदा जयसिंह को है । इसकी चमक-दमक आज भी उसी तरह है ।

आमेट का दूसरा नाम कछवाहा अम्वर है । यह कछवाहा राजपूतों की प्राचीन राजधानी थी । राजपूत शैली में यहां महल अपनी चमक दमक हेतू प्रसिद्ध हैं । इन महलों

में जनाना महल, मनोरम जयमहल, सुहाग मन्दिर, सुख मन्दिर आकर्षण का केन्द है । इस महल के निकट जयगढ़ का किला है । इसी के पास यह जैन मन्दिर प्रसिद्ध है ।

मन्दिर सांवला जी प्रभु नेमिनाथ को समर्पित है । मन्दिर संघीजी प्राचीन मन्दिर है । इसमें चन्द्रप्रभु की प्रतिमा है । संकटहरण मन्दिर प्रभु पार्श्वनाथ को समर्पित है । यह एक १८वीं सदी का कीर्ति का स्तम्भ है ।

बरखेड़ा तीर्थ :

यहां प्रभु ऋषभदेव की प्रतिमा है । इस तीर्थ का जीर्णोद्धार आचार्य श्री नित्यनन्द जी ने किया था । विशाल मन्दिर दर्शनीय है । इसमें प्रभु शांतिनाथ, प्रभु पार्श्वनाथ, उद्देश्य पुंडरिक स्वामी, प्रभु दमदत्त स्वामी की भव्य प्रतिमाएं हैं ।

पार्श्वनाथ-कुंथलगिरि :

इस तीर्थ की स्थापना प्रसिद्ध दिगम्बर आचार्य श्री देशभूषण ने १९५३ में की थी । जयपुर से पूर्व में अरावली पर्वत माला को जोड़ती एक ४०० फुट ऊंची शिखर पर १०० सीढ़ियां पार करनी पड़ती है । यह महावीर जी के रास्ते में पड़ता है । जयपुर का इतिहास काफी प्राचीन है । जयपुर से पहले आमेट ही नगर था, इस नगर के खण्डहर आमेट के किले में देखे जा सकते हैं । जयपुर में कुछ कार्य विश्वप्रसिद्ध हैं । यहां सबसे बड़ा मूर्ति उद्योग है । यहां इस काम का पूरा बाजार है । इसमें संगमरमर की प्रतिमा के अतिरिक्त धातु प्रतिमाओं कार्य प्रसिद्ध है । यहां की साड़ी, रजाई अपने आप में उदाहरण है ।

जयपुर में कई हस्तलिखित भण्डार बहुत प्रसिद्ध है । यहां जैन कला संस्कृति सुरक्षित है । भारी मात्रा में हिन्दू